# ❍ 27 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन किया ?*

➢➢ *वफादार, फरमानबरदार बनकर रहे ?*

➢➢ *स्वमान में स्थित रह हद की इच्छाओं को समाप्त किया ?*

➢➢ *हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर रियल गोल्ड बनकर रहे ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ विदेही बनने की विधि है-बिन्दी बनना। *अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है इसलिए बापदादा कहते हैं अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ और चेक करो-किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं।* अविनाशी, अमिट तिलक रहे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं बाप की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को बाप की याद की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? *यह याद की छत्रछाया सर्व विघ्नों से सेफ कर देती है। किसी भी प्रकार का विघ्न छत्रछाया में रहने वाले के पास आ नहीं सकता। छत्रछाया में रहने वाले निश्चित विजयी है ही। तो ऐसे बने हो? छत्रछाया से अगर संकल्प रूपी पाँव भी निकाला तो माया वार कर लेगी।*

〰✧ *किसी भी प्रकार की परिस्थिति आवे छत्रछाया में रहने वाले के लिए मुश्किल से मुश्किल बात भी सहज हो जायेगी। पहाड़ समान बातें रूई के समान अनुभव होंगी। ऐसी छत्रछाया की कमाल है।* जब ऐसी छत्रछाया मिले तो क्या करना चाहिए? चाहे अल्पकाल की कोई भी आकर्षण हो लेकिन बाहर निकला तो गया। इसलिए अल्पकाल की आकर्षण को भी जान गये हो। इस आकर्षण से सदा दूर रहना। हद की प्राप्ति तो इस एक जन्म में समाप्त हो जायेगी। बेहद की प्राप्ति सदा साथ रहेगी। तो बेहद की प्राप्ति करने वाले अर्थात् छत्रछाया में रहने वाले विशेष आत्मायें है, साधारण नहीं। यह स्मृति सदा के लिए शक्तिशाली बना देगी।

〰✧ जो सिक्कीलधे लाडले होते हैं वह सदा छत्रछाया के अन्दर रहते हैं। याद ही छत्रछाया है। इस छत्रछाया से संकल्प रूपी पाँव भी बाहर निकाला तो माया

आ जायेगी। यह छत्रछाया माया को सामने नहीं आने देती। *माया की ताकत नहीं है - छत्रछाया में आने की। वह सदा माया पर विजयी बन जाते हैं। बच्चा बनना अर्थात् छत्रछाया में रहना। यह भी बाप का प्यार है जो सदा बच्चों को छत्रछाया में रखते हैं। तो यही विशेष वरदान याद रखना - कि लाडले बन गये, छत्रछाया मिल गई। यह वरदान सदा आगे बढ़ाता रहेगा।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ आप चैलेन्ज करते हो कि हम आपको जीवन में मुक्ति डबल दिला सकते हैं - जीवन भी हो और मुक्ति भी हो, ऐसी चैलेन्ज की है ना? नशे से कहते हो कि जीवनमुक्ति आपका और हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो *स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात दु:ख के चक्करों से मुक्त रहने वाले और मुक्त करने वाले।* वशीभूत होने वाले नहीं लेकिन अधिकारी बन, मालिक बन सर्व कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाले।

〰✧ धोखा खाने वाले नहीं लेकिन औरों को भी धोखे से छुडाने वाले। यही अभ्यास करते हो ना - *कर्म में आना और फिर न्यारे हो जाना,* तो याद का अभ्यास क्या रहा? - आना और जाना और पढाई अर्थात ज्ञान का सार क्या है? कर्मातीत बन घर जाना है और फिर राज्य करने का पार्ट बजाने अपने राज्य में

आना है। यही ज्ञान का सार है ना। तो *'जाना' और 'आना' - यही ज्ञान और योग है,* इसी अभ्यास में दिन-रात लगे हुए हो।

〰✧ बुद्धि में घर जाने की और फिर राज्य में आने की खुशी है। जैसे मधुबन अपने घर में आते हो तो कितनी खुशी रहती है। जब से टिकेट बुक कराते हो तब से जाना है, जाना है - यह बुद्धि में याद रहता है ना! तो जब मधुबन घर की खुशी है तो आत्मा के घर जाने की भी खुशी है। लेकिन *खुशी से कौन जायेगा? जितना सदा यह 'आने' और 'जाने' का अभ्यास होगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ पाण्डव एक सेकण्ड में एकदम अलग हो सकते हो? आत्मा अलग मालिक और कर्मेन्द्रियां कर्मचारी अलग, यह अभ्यास जब चाहो तब होना चाहिए। *अच्छा, अभी-अभी एक सेकण्ड में न्यारे और बाप के प्यारे बन जाओ। पावरफुल अभ्यास करो बस मैं हूँ ही न्यारी। यह कर्मेन्द्रियाँ हमारी साथी हैं, कर्म की साथी हैं लेकिन मैं न्यारा और प्यारा हूँ। अभी एक सेकण्ड में अभ्यास दोहराओ।* (ड्रिल) सहज लगता है कि मुश्किल है? सहज है तो *सारे दिन में कर्म के समय यह स्मृति इमर्ज करो, तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव सहज करेंगे।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- कभी मतभेद में आकर पढ़ाई नही छोड़ना*"

➳ _ ➳ *भगवान परमधाम से आकर, मेरे दामन में सुखो के फूल बिखेरेगा... मुझे यूँ पालेगा,युँ पढ़ायेगा, और मेरा ख्याल रखेगा.*.. अपनी श्रीमत देकर, पुरानी दुनिया के दुखो के जंगल में, सुखो की बाड़ सजाकर... मुझे खिलता रूहानी गुलाब सा महकायेगा.... यह ख्वाब तो कभी न संजोये थे... *बस ईश्वर के दर्शन भर ही तो मुझ आत्मा ने सदा चाहे थे... उसको पाना, चाहना, प्यार करना, मेरी चाहत भला कब थी, मुझे प्यार करना भी भगवान ने ही तो सिखाया है..*. बस इस मीठे चिंतन ने आँखों को भिगो दिया... और भीगी पलके लिए प्यार के सागर बाबा को निहारने मै आत्मा... वतन में उड़ चली हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा की अपने प्यार और शिक्षाओ के साये में, माया से सुरक्षित करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर को पिता,टीचर, सतगुरु रूप में पाकर महानतम भाग्य के नशे में झूम जाओ... मीठे बाबा को पाकर, अमूल्य ज्ञान खजाने से कभी विमुख न होना.*.. कभी भी किसी मतभेद में आकर इस खजाने को न ठुकराना... यह पढ़ाई और ईश्वरीय याद ही सच्चा सहारा है... जो माया के दलदल से निकाल, सुखो भरे स्वर्ग में

पहुंचाएगा..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की श्रीमत से, अपना भाग्य संवारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा शरीर के भान और विकारो के जंगल में किस कदर उलझी रही... आपने मुझे अपनी गोद में लेकर मेरा सुंदर भाग्य सजाया है... *ईश्वर को ही शिक्षक रूप में पाने वाली मै आत्मा... इस संसार में सबसे ज्यादा भाग्यशाली आत्मा हूँ..*. ईश्वरीय शिक्षाओ में, खुशियो से सजधज कर मुस्करा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को उज्ज्वल भविष्य का आधार श्रीमत को समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *मीठे बाबा के अतुलनीय ज्ञान धन को सदा बुद्धि दिल में समाये रहो... यादो के झूले में बेठ, खुशियो भरे नगमे गुनगुनाते रहो.*.. किसी भी बात के प्रभाव में आकर, ईश्वर पिता का हाथ और साथ कभी न छोडो... वरना अकेले हो जाओगे... और अकेला देख मायावी प्रभाव अपने चंगुल में पुनः ले जायेगा... मीठे बाबा का पढ़ाई रुपी हाथ कसके पकड़ लो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के सच्चे प्यार में दिल से कुर्बान होकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपके बिना तो कितनी अकेली थी... सच्चा सुख और सच्ची खुशियां मुझ आत्मा के लिये.... सदा एक अनसुलझी पहेली थी.*.. आपने प्यारे बाबा मेरे जीवन को दुखो से सुलझाया है... और सच्चे प्यार और पढ़ाई से मुझे सदा का आबाद किया है... मै आत्मा अब आपका साथ कभी भी न छोड़ूंगी..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान धन से विश्व का बादशाह बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... *महान भाग्य सजाने वाली, देवताई सुखो को दामन को भरने वाली और परमात्म सुख की अनुभति कराने वाली, इस अमूल्य पढ़ाई को कभी भी न छोड़ना.*.. यह पढ़ाई ही त्रिकालदर्शी बनाकर... बेहद के सारे राज समझाएगी... और माया के विकारो से सुरक्षित रख, ईश्वरीय

दिल की धड़कन बनाएगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की प्यार भरी बाँहों में मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "प्यारे दुलारे बाबा मेरे... *भला भगवान को पाकर और मुझे क्या चाहिए... कि मै यह सारे खजाने छोड़ दूँ.... मीठे बाबा अब तो मै आत्मा... एक पल के लिए भी, आपका दामन नही छोड़ूंगी.*.. हर साँस से आपको और श्रीमत को पकड़े हुए... खुशियो के आसमाँ में उड़ती ही रहूंगी... मीठे प्यारे बाबा से सदा संग रहने का वादा करके मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आयी...

---

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- अपनी चलन रॉयल रखनी है*"

➳ _ ➳ बाप समान बनने का दृढ़ संकल्प मन में धारण कर मैं मन बुद्धि के विमान पर बैठ पहुँच जाती हूँ भगवान की उस अवतरण भूमि मधुबन में जहां शिव बाबा के डायरेक्शन पर चल, सम्पूर्ण समर्पण भाव से ब्रह्मा बाप द्वारा किये हर कर्म का यादगार है।*अपनी चलन वा दैवी गुणों से बाप का नाम बाला करने वाले अपने प्यारे ब्रह्मा बाप समान बनने का संकल्प मुझे स्वत: ही बाबा के कमरे की ओर ले कर चल पड़ता है*। मन मे अपने प्यारे मीठे शिव पिता की याद को समाये धीरे - धीरे कदम बढ़ाती हुई मैं बाबा की कमरे में प्रवेश करती हूँ। कमरे की चौखट पर पैर रखते ही मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे अव्यक्त बापदादा "आओ बच्चे" कहकर मुझे पुकार रहें हैं।

➳ _ ➳ बाबा का "आओ बच्चे" कहकर पुकारना ही मेरे हृदय के तारों को झनझना देता हैं और बाबा के असीम प्यार का अहसास मन मे अथाह खुशी के साथ - साथ आंखों में खुशी के आंसू ले आता है। *बाबा के स्नेह में खोई

एकाएक मैं अनुभव करती हूँ जैसे बापदादा मेरे पास आकर मेरा हाथ पकड़ कर मुझे कमरे के अन्दर ले जा रहें हैं*। कमरे के अंदर आ कर कोने में रखे पलंग पर बापदादा बैठ जाते हैं और बड़े प्यार से मेरा हाथ पकड़ मुझे अपने पास बिठा लेते हैं। बाबा के इस असीम स्नेह को पाकर खुशी के आंसू जो मेरी आँखों से बह रहें है उन्हें बाबा एक - एक करके अपने हाथ में ले रहे है और वो प्रेम के आंसू मोती बन बाबा के गले का हार बनते जा रहें हैं।

➳ _ ➳ बाबा के हाथों में अपना हाथ देकर मैं मन ही मन बाप समान बनने का और अपनी चलन वा दैवी गुणों से बाप का नाम बाला करने का जैसे ही संकल्प करती हूँ। मैं स्पष्ट अनुभव करती हूँ कि बाबा मेरे हर संकल्प को पढ़ रहे हैं। *मेरे मन की हर बात बिना कहे बाबा समझ रहें हैं। एक बड़ी प्यारी गुह्य मुस्कराहट के साथ अब बाबा मुझे निहारते हुए, अपनी मीठी दृष्टि मुझ पर डाल कर, मेरे हर संकल्प को पूरा करने का मेरे अंदर बल भर रहें हैं*। ऐसा लग रहा है जैसे बाबा की दृष्टि से, बाबा की सर्वशक्तियाँ मेरे अंदर गहराई तक समाती जा रही हैं और मेरे हर संकल्प को सिद्ध करने की शक्ति मेरे अंदर भरती जा रही है। *अपना वरदानी हाथ बाबा मेरे सिर पर रख कर मुझे "संकल्प सिद्धि" का वरदान दे रहें हैं*।

➳ _ ➳ बाबा से वरदान लेकर, बाबा के सामने किये अपने हर संकल्प को दृढ़ता के साथ पूरा करने की स्वयं से और बाबा से प्रतिज्ञा करके अब मैं बाबा के कमरे से बाहर आकर हिस्ट्री हाल की तरफ चल पड़ती हूँ और *हिस्ट्री हाल की दीवारों पर लगे साकार ब्रह्मा बाबा के हर कर्म के यादगार चित्रों को बड़े ध्यान से देखती हुई, बाबा के हर कर्म को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प कर, अब मैं स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए शान्ति स्तम्भ पर आकर बैठ जाती हूँ*। अपने निराकारी स्वरूप में स्थित हो कर, अपने शिव पिता का आह्वान करते ही मैं अनुभव करती हूँ जैसे बाबा परमधाम से नीचे उतर आये है।

➳ _ ➳ पूरा शांति स्तम्भ बाबा की सर्वशक्तियों की छत्रछाया से आच्छादित हो गया है। बाबा की सर्वशक्तियों की मीठी - मीठी फुहारें पूरे शान्ति स्तम्भ पर

बरस रही हैं। *ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शांति स्तम्भ अथाह शक्ति का स्तम्भ बन गया है और उसके नीचे बैठते ही उन फुहारों के रूप में वो सारी शक्ति मुझ आत्मा में समाने लगी है। स्वयं को मैं बहुत ही ऊर्जावान अनुभव कर रही हूँ*। मेरे हर संकल्प को सिद्ध करने के लिये बाबा ने जैसे अपनी सारी शक्ति मेरे अंदर भर दी है। बाबा की सर्वशक्तियों से भरपूर होकर अब मैं बाबा की कुटिया में आकर अपने प्यारे बापदादा का शुक्रिया अदा करती हूँ और *बाबा के साथ अपने मन की हर बात शेयर करके वापिस अपनी कर्मभूमि पर आकर अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होती हूँ।

➳ _ ➳ बाबा से मिली सर्वशक्तियों का बल अब मुझे अपने पुराने स्वभाव संस्कारो को मिटाने और दैवी गुणों को धारण करने की हिम्मत दे रहा है। *अपने पुराने आसुरी स्वभाव संस्कारों को अब मैं सहजता से छोड़ती जा रही हूँ। मनसा, वाचा, कर्मणा स्वयं पर पूरा अटेंशन दे कर, हर कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करते हुई अब मैं अपनी चलन वा दैवी गुणों से बाप का नाम बाला करने की अपनी प्रतिज्ञा को सहज ही पूरा कर रही हूँ*।

---

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं स्वमान में स्थित रह हद की इच्छाओं को समाप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं इच्छा मात्रम अविद्या आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

---

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा सदैव हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा रीयल गोल्ड हूँ ।*
✺ *मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *प्रसन्नचित आत्मा; कोई कैसी भी आत्मा परेशान हो, अशान्त हो उसको अपने प्रसन्नता की नजर से प्रसन्न कर देगी। जो बाप का गायन है 'नजर से निहाल करने वाले', वह सिर्फ बाप का नहीं है आपका भी यही गायन है* और अभी समय प्रमाण जितना समय समीप आ रहा है तो *नजर से निहाल करने की सेवा करने का समय आयेगा। सात दिन का कोर्स नहीं होगा, एक नजर से प्रसन्नचित हो जायेंगे। दिल की आश आप द्वारा पूर्ण हो जायेगी*।

✺ *ड्रिल :- "नजर से निहाल करने की सेवा का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा मन बुद्धि को एकाग्र कर भृकुटी... के मध्य में स्वयं को अनुभव करती हूं... *आत्म पंछी उड़ान भरता है सूक्ष्म वतन की ओर जहां... ब्रह्मा बाबा और उनके मस्तक के बीचों बीच परम ज्योति बापदादा* को देख मैं आत्मा अपनी सुधबुध भूल जाती हूँ...

➳ _ ➳ बाबा बड़े प्यार से मुझे देख रहे हैं... हाथ से पास आने का इशारा करते हैं... मैं तुरंत उनके पास पहुंच जाती हूं... पाती हूं अपने आपको बाबा की गोद में... *बाबा बड़े प्यार से मेरे सर पर हाथ फिराते हैं... और आशीर्वाद देते हैं... प्रसन्नचित आत्मा भव* और दृष्टि दे रहे हैं... बाबा की नजर पड़ते ही मैं आत्मा... भूल जाती हूं सब कुछ... असीम शान्ति... आनन्द ही आनन्द... कैसा जादू है... *बाबा की नजर से ही मैं आत्मा निहाल हो चली हूं खो चली हूं... इस परम आनंद... परम सुख में...*

➳ _ ➳ *मेरे अंदर से दुख... अशांति... सब भाप बन कर उड़ता जा रहा है...* अपने अंदर प्रसन्नता का अनुभव होते ही... मेरी सबको देखने की नजर बदलती जा रही है... *मेरी दृष्टि सबके लिए प्यार भरी... रहम भरी... कल्याणकारी होती जा रही है...*

➳ _ ➳ *सुख और आनंद...* के झूले में झूलते हुए मैं एहसास करती हूं कि मुझे बाबा ने जो अनुभव कराया है... वैसा ही अनुभव मुझ आत्मा से विश्व की सर्व आत्माओं को हो रहा है... *बाप समान बन किसी के प्रति भी घृणा भाव न रख उन्हें सुख और आनंद दे रही हूं... अपनी शुभ भावना की दृष्टि द्वारा उनका कल्याण कर रही हूं... शान्ति को खोजती आत्माओं के दिल की आस पूर्ण कर रही हूं...*

➳ _ ➳ *इन संकल्पों के उदय होने के साथ ही मैं अपने अंदर एक नई ऊर्जा... और प्रसन्नता... को पाती हूं* और अपने इस सुंदर पावन स्वरूप के लिये... इस सेवा के लिए... बाबा को दिल से... धन्यवाद देती हूं...

---

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔